

ई- पाठशाला

कक्षा - 12th | राजनीतिक विज्ञान

दो ध्रुवीयता का अंत

IMPORTANT QUESTIONS

कर लो 4 से 5 नंबर पक्के !

RAPID
REVISION

LIVE 07 OCT | 6:30 PM



बहुविकल्पात्मक प्रश्न

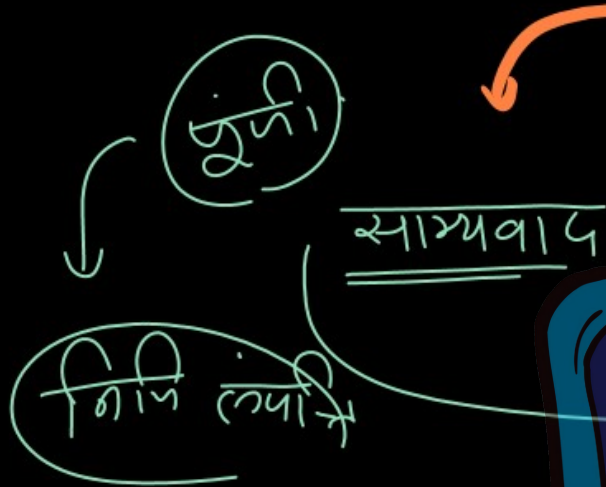
1. सोवियत राजनीतिक प्रणाली की धुरी क्या थी?

- ☐ अ संसद
- ☒ ब कम्युनिस्ट पार्टी
- ☐ स न्यायपालिका
- ☐ द निजी उद्योग

शक्ति की व्यवस्था

सभी संस्थाओं

जवाब दे xx



2. सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था किस प्रकार की थी?

- ☐ अ पूर्णतः निजी
- ☐ ब योजनाबद्ध और राज्य के नियंत्रण में
- ☐ स केवल कृषि आधारित
- ☐ द विदेशी कंपनियों के नियंत्रण में

3. सोवियत संघ में मिलिकियत का प्रमुख रूप क्या था?

अ

निजी स्वामित्व

ब

विदेशी स्वामित्व

स

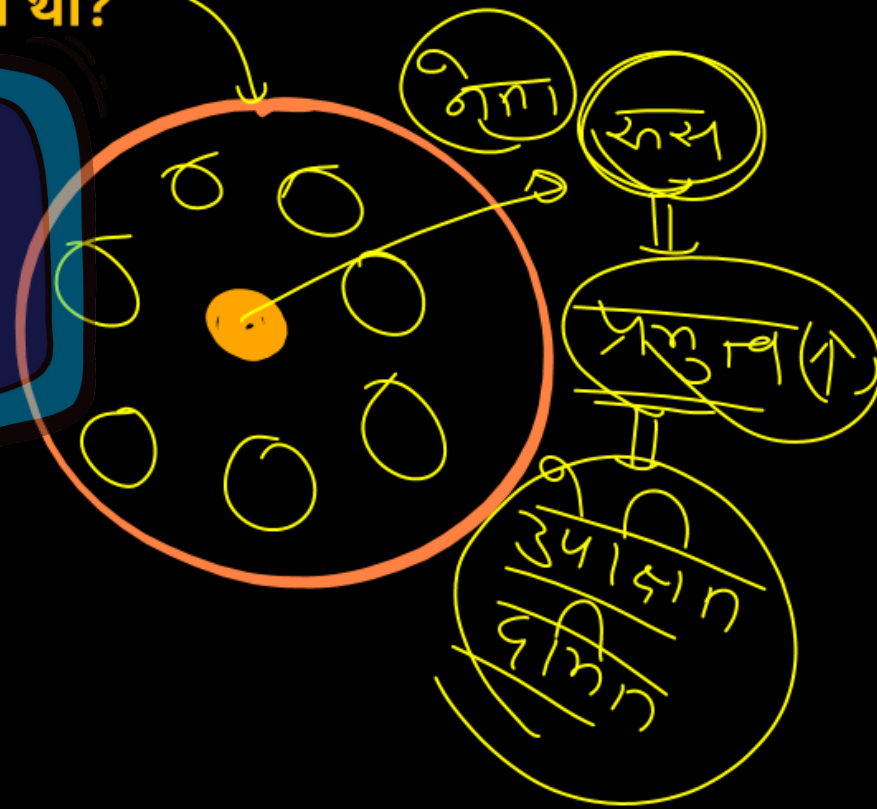
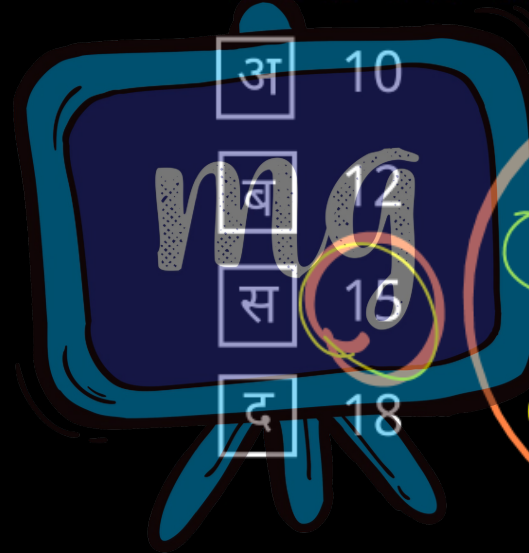
राज्य का स्वामित्व

द

सामुदायिक निजी स्वामित्व

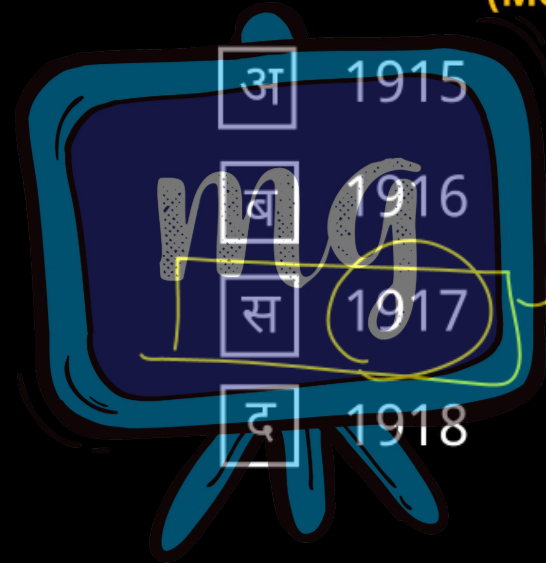
६५ ✓

4. सोवियत संघ कितने गणराज्यों को मिलाकर बनाया गया था?



5. रूस में समाजवादी क्रांति किस वर्ष हुई?

(Model Paper-2022, Model Paper-2024)



उद्देश्य → समाजवादी
समाज की
स्थापना,
व्यवस्था
के लिए

6. सोवियत राजनीतिक प्रणाली किस विचारधारा पर आधारित थी?

(Model Paper-2025)

☒ अ समाजवाद

☐ ब पूँजीवाद

☐ स समाजवाद एवं पूँजीवाद

☐ द इनमें से कोई नहीं

राज्य स्वामित्व

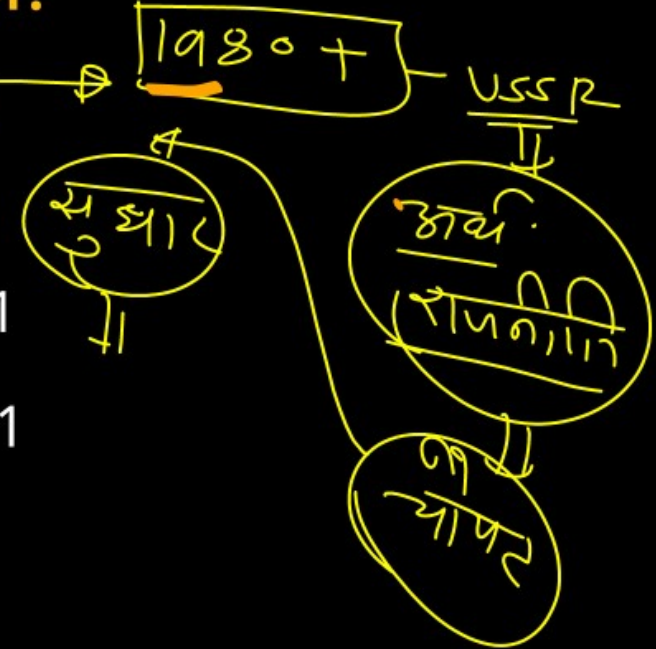
लोकसाम्यकारी
राज्य

राज्य

निष्ठा

7. मिखाइल गोर्बाचेव सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव कब बने?

- ☒ अ मार्च 1985
- ☐ ब जून 1988
- ☐ स अगस्त 1991
- ☐ द दिसंबर 1991



8. गोर्बाचेव द्वारा आरंभ किए गए 'पुनर्रचना' के सुधार को क्या कहा गया?

- अ ग्लासनोस्त
- ब पेरिस्ट्रोइका
- स शॉक थेरेपी
- द राष्ट्रकुल

(tri)

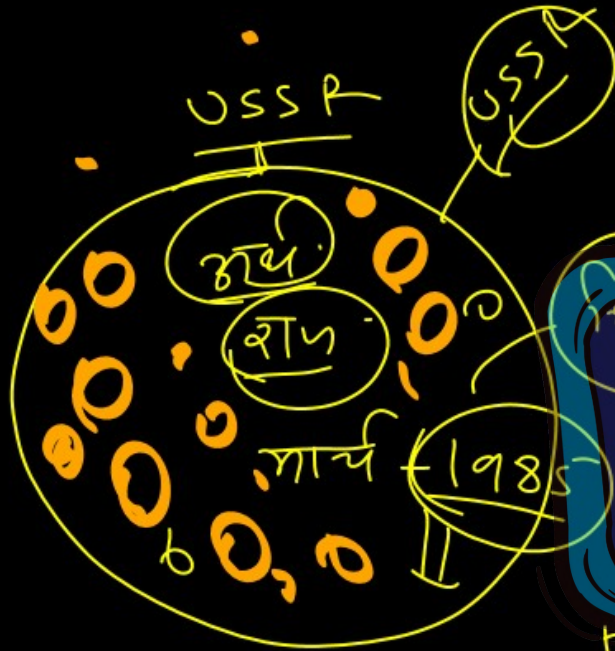
गिला (n)

उपर ले खुला

उरुआ

9) गोर्बाचेव द्वारा शुरू किए गए 'खुलापन' के सुधार को क्या कहा गया?

- ☒ अ ग्लासनोस्त
- ☐ ब राष्ट्रवाद
- ☐ स पेरेस्त्रोइका
- ☐ द सामूहिकीकरण



10. 1991 के असफल तख्तापलट को किसने बढ़ावा दिया था?

- ☐ अ बाल्टिक गणराज्यों ने
- ☐ ब कम्युनिस्ट पार्टी के गरमपंथियों ने
- ☐ स मध्य एशियाई गणराज्यों ने
- ☐ द पश्चिमी देशों ने

11. गोर्बाचेव ने सोवियत संघ के राष्ट्रपति पद से कब इस्तीफा दिया?

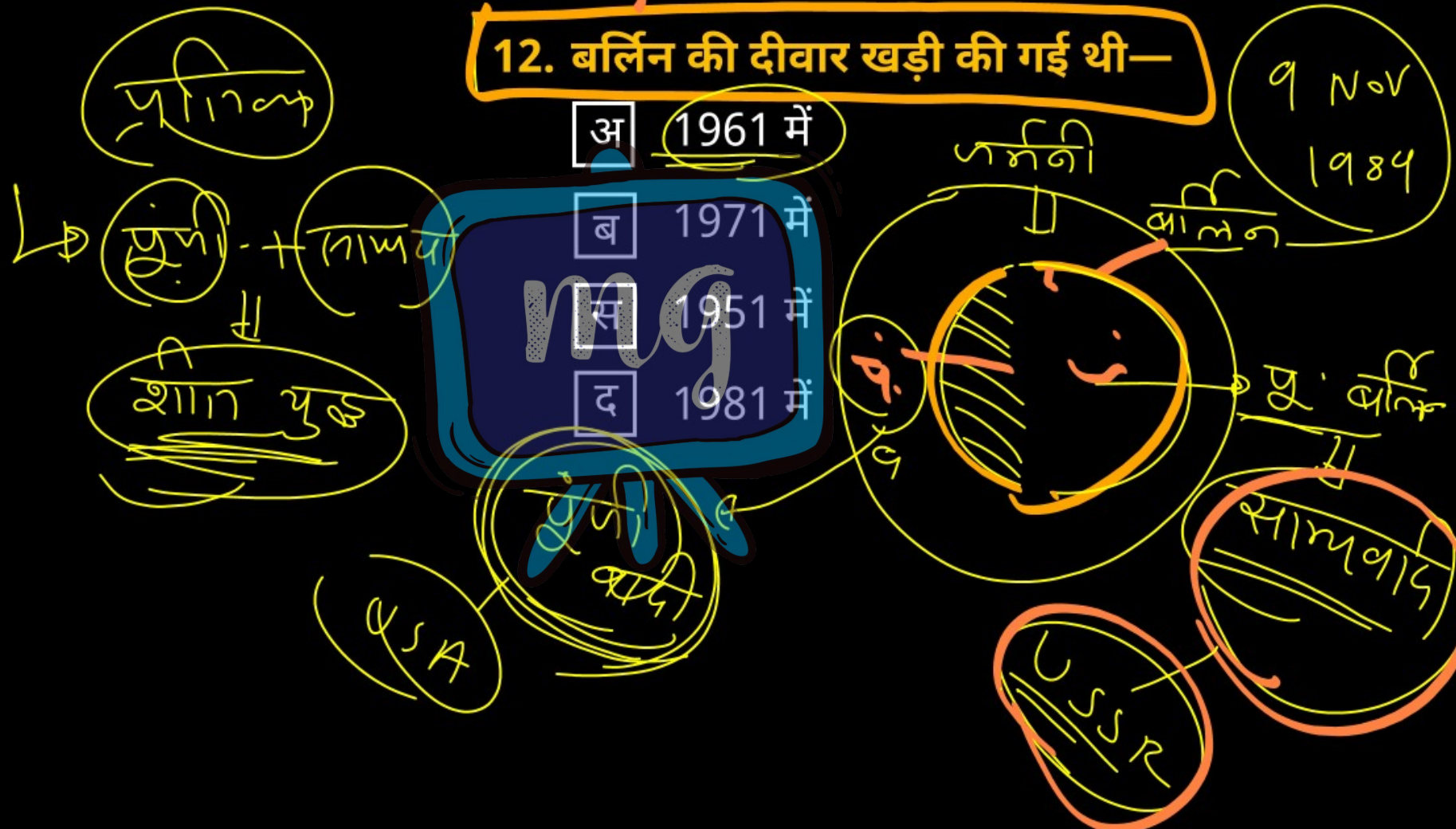
अ 9 नवंबर 1989

ब 25 दिसंबर 1991

स जून 1990

द अगस्त 1991

12. बर्लिन की दीवार खड़ी की गई थी—



13. शीतयुद्ध के सबसे बड़े प्रतीक के रूप में किसे जाना जाता था? (RBSE-2025)

- ☐ अ चीन की दीवार
- ☐ ब बर्लिन की दीवार
- ☐ स रूस के पहाड़
- ☐ द भारत के पठार

1961

1989

~~1961~~

14. बर्लिन की दीवार कब गिराई गई?

(Model Paper-2026)

अ 1969

ब 1989

स 1961

द 1991

गिराई

15. सोवियत संघ का उत्तराधिकारी राज्य किसे स्वीकार किया गया? (RBSE-2022)

Handwritten notes and a diagram illustrating the successor states of the Soviet Union.

Handwritten Notes:

- ऊपर लिखी लीकिया (1)
- परमाणु शक्ति देश

Options (A, B, C, D) with checkmarks:

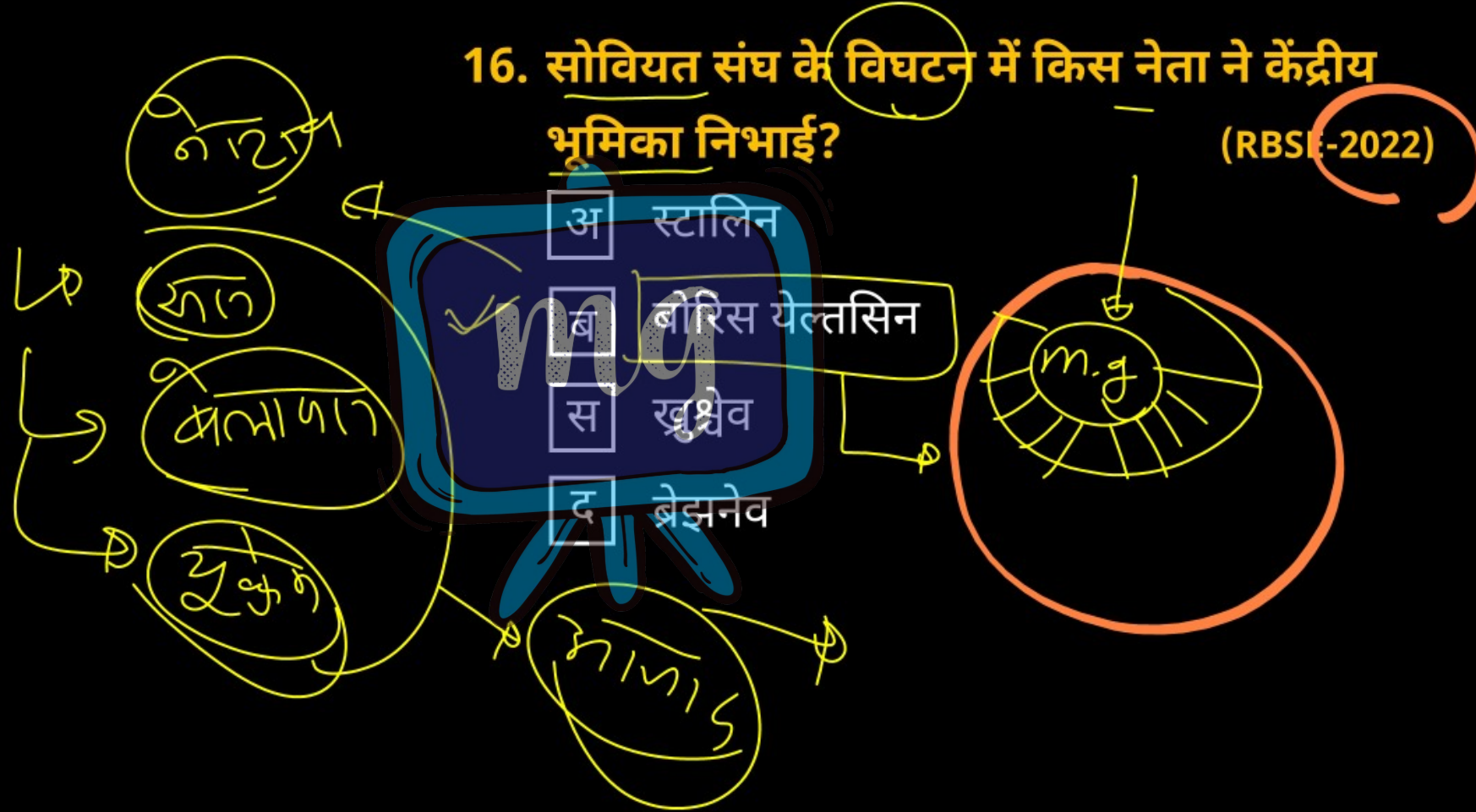
- अ यूक्रेन
- ब रूस
- स बेलारूस
- द लिथुआनिया

Diagram:

A globe showing the Soviet Union (USSR) in orange. A line points from the word "रूस" (Russia) in the options to the Russian Federation on the map. The word "USSR" is written above the map, and "रूस" is written in a circle to the right of the map.

16. सोवियत संघ के विघटन में किस नेता ने केंद्रीय भूमिका निभाई?

(RBSK-2022)



17. बोरिस येल्तसिन के नेतृत्व में सोवियत संघ के तीन
बड़े गणराज्यों ने सोवियत संघ को कब भंग किया?

(RBSE-2026)



18. बाल्टिक गणराज्यों का सही समूह कौन-सा है?

(RBSE-2026)

R

all

ALL

- ☐ अ एस्टोनिया, यूक्रेन, जॉर्जिया
- ☐ ब एस्टोनिया, लातविया, जॉर्जिया
- ☐ स एस्टोनिया, लातविया, लिथुआनिया
- ☐ द एस्टोनिया, यूक्रेन, लिथुआनिया

19. सोवियत संघ के पतन का मूल कारण क्या बताया गया है?

- ☐ अ प्राकृतिक संसाधनों की कमी
- ☐ ब जनसंख्या की कमी
- ☐ स कृषि भूमि की कमी
- ☐ द राजनीतिक-आर्थिक संस्थाओं की अंदरूनी कमजोरी

पूर्वी सोवियत
जोरीक देश (1)

20. सोवियत संघ के संसाधनों का बड़ा भाग किस पर खर्च हुआ?

- ☐ अ पर्यटन पर
- ☒ ब परमाणु हथियार और सैन्य साजो-सामान पर
- ☐ स खेलों पर
- ☐ द निजी उद्योगों पर

21. सोवियत प्रशासन की प्रमुख समस्या क्या थी?

अ अत्यधिक विकेंद्रीकरण

ब भारी भ्रष्टाचार और केंद्रीकरण

स निजीकरण

द मुक्त व्यापार

केंद्र

X-

X

22. **राष्ट्रवादी असंतोष** सबसे प्रबल कहाँ दिखाई दिया?

☐ अ केवल मध्य एशिया में

☒ ब रूस, यूक्रेन, जार्जिया और बाल्टिक क्षेत्र में

☐ स केवल अफगानिस्तान में

☐ द केवल पूर्वी जर्मनी में

all

वैश्वीकरण

23. 'दूसरी दुनिया' के पतन का पहला प्रमुख परिणाम

क्या था?

(I) USA
दुश्मन

(II) \$
वैश्वीकरण

अ

नया सैन्य गुट

ब

शीतयुद्ध के संघर्ष की समाप्ति

स

उपनिवेशवाद का आरंभ

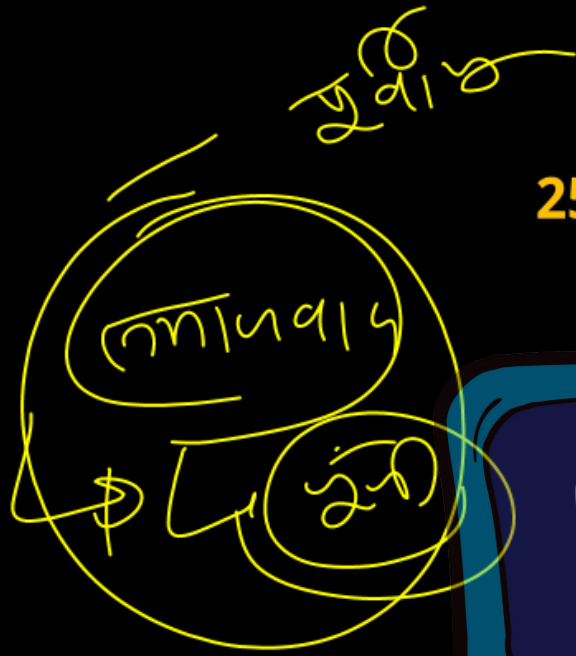
द

सोवियत संघ का विस्तार

24. सोवियत खेमे के अंत का एक महत्वपूर्ण परिणाम क्या था?

- ☒ अ नए देशों का उदय
- ☐ ब साम्यवाद का विस्तार
- ☐ स सैन्य गुटों की वृद्धि
- ☐ द पुराने साम्राज्यों की वापसी

शुर्की खुली



25. 'शॉक थेरेपी' किस परिवर्तन से संबंधित थी?

- ☐ अ पूँजीवाद से समाजवाद
- ☐ ब समाजवाद से पूँजीवाद
- ☐ स लोकतंत्र से राजतंत्र
- ☐ द कृषि से उद्योग

26. 'शॉक थेरेपी' का निर्देशन मुख्य रूप से किन संस्थाओं ने किया?

- ☐ अ संयुक्त राष्ट्र और नाटो
- ☒ ब विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
- ☐ स वारसा और नाटो
- ☐ द यूरोपीय संघ और राष्ट्रकुल

सह
युज

27. शॉक थेरेपी की सर्वोपरि मान्यता क्या थी?

- ☐ अ राज्य स्वामित्व सबसे प्रभावी है
- ☐ ब निजी स्वामित्व सबसे प्रभावी है
- ☐ स सामूहिक खेती ही सर्वोत्तम है
- ☐ द विदेशी व्यापार समाप्त होना चाहिए

28. रूस के किन दो गणराज्यों में हिंसक अलगाववादी आंदोलन चले?

- ☒ अ चेचन्या और दागिस्तान
- ☐ ब एस्टोनिया और लातविया
- ☐ स यूक्रेन और बेलारूस
- ☐ द चेक और स्लोवाकिया



29. नगरनो कराबाख किस देश का एक प्रांत बताया गया है?

- ☐ अ जार्जिया
- ☒ ब अज़रबैजान
- ☐ स रूस
- ☐ द यूक्रेन



30. मध्य एशियाई गणराज्यों में किस संसाधन का विशाल भंडार है?

- ☐ अ हाइड्रोकार्बनिक संसाधन
- ☐ ब केवल कोयला
- ☐ स केवल सोना
- ☐ द लकड़ी

31. शीतयुद्ध के दौरान भारत और सोवियत संघ के संबंध किस प्रकार के थे?

- ☐ अ केवल सैन्य
- ☐ ब केवल आर्थिक
- ☒ स बहुआयामी
- ☐ द केवल सांस्कृतिक

रिक्त स्थान

1. समाजवादी सोवियत गणराज्य 1917 की _____
के बाद अस्तित्व में आया। (RBSE-2025)



2. पूर्वी जर्मनी की जनता ने सन् _____ में बर्लिन
की दीवार गिरा दी। (RBSE-2024)



3. दिसंबर 1991 में _____ के नेतृत्व में सोवियत
संघ के तीन गणराज्यों ने उसकी समाप्ति की
घोषणा की। (Model Paper-2026)



4. सोवियत संघ के विघटन के बाद _____ अकेली
महाशक्ति बन गया।



5. चेकोस्लोवाकिया के विभाजन से _____ तथा
_____ नामक दो देश बने। (RBSE-2023)

०
२१ क



6. कश्मीर मामले में सोवियत संघ ने _____ में
भारत के रुख का समर्थन किया।



7. भारत और रूस दोनों _____ विश्व के समर्थक हैं।



अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. किन देशों को 'दूसरी दुनिया' के देश' कहा जाता था? (Model Paper-2023)

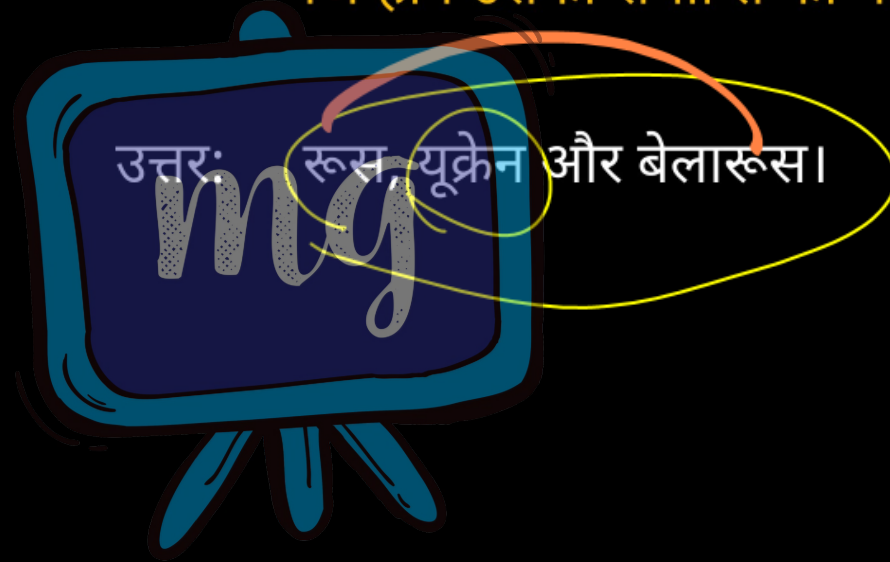
उत्तर: सोवियत संघ की समाजवादी प्रणाली पर आधारित पूर्वी यूरोप के देशों को 'दूसरी दुनिया' कहा जाता था।

प्रश्न 2 गोर्बाचेव ने किस दिशा में सुधारों की नीति अपनाई?

उत्तर: आर्थिक-राजनीतिक सुधारों और लोकतंत्रीकरण की दिशा में।

प्रश्न 3. सोवियत संघ के तीन बड़े गणराज्य कौन-से थे जिन्होंने उसकी समाप्ति की घोषणा की?

उत्तर: रूस, यूक्रेन और बेलारूस।



**प्रश्न 4. स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्रकुल में कौन-से देश
शामिल हुए? (Model Paper-2023)**

उत्तर: रूस, बेलारूस, यूक्रेन तथा अध्याय में उल्लिखित
अन्य पूर्व सोवियत गणराज्य राष्ट्रकुल में शामिल
हुए।

प्रश्न 5. बाल्टिक गणराज्यों के नाम लिखिए।

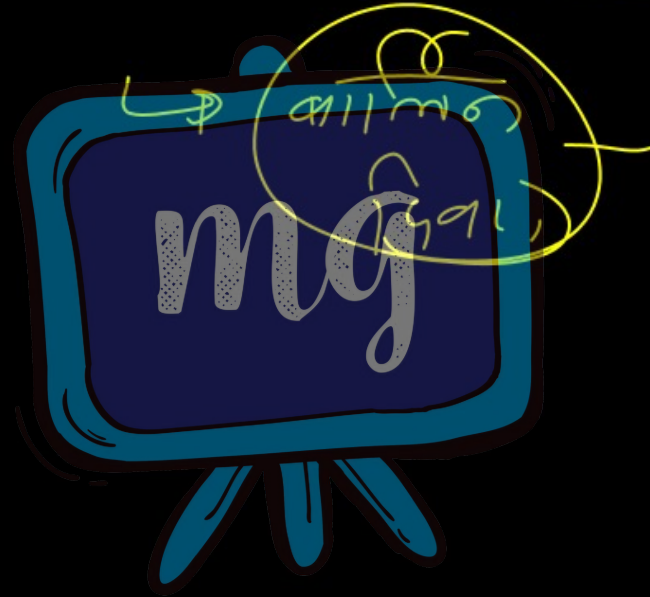
(Model Paper-2025)



उत्तर: एस्टोनिया, लातविया और लिथुआनिया।

प्रश्न 6. जर्मनी का एकीकरण कब हुआ?

(RBSE-2024)



प्रश्न 7. सोवियत अर्थव्यवस्था की दीर्घकालीन प्रमुख समस्या क्या थी?

उत्तर: आर्थिक गतिरोध।



**प्रश्न 8. सोवियत संघ के विघटन का अंतिम और
सर्वाधिक तात्कालिक कारण क्या था?**

(Model Paper-2023)



उत्तर: राष्ट्रवादी भावनाओं और संप्रभुता की इच्छा का
उभार।

प्रश्न 9. 'शॉक थेरेपी' का शाब्दिक अर्थ क्या है?

(Model Paper-2023)



प्रश्न 10. भारत-सोवियत संबंधों के कितने प्रमुख आयाम बताए गए हैं?

सहकारिता

उत्तर: चार - आर्थिक, राजनीतिक, सैन्य और सांस्कृतिक।



प्रश्न 1. सोवियत राजनीतिक प्रणाली की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर —

1. कम्युनिस्ट पार्टी की प्रधानता — सोवियत राजनीतिक प्रणाली की धुरी कम्युनिस्ट पार्टी थी।
2. एक-दलीय व्यवस्था — किसी अन्य राजनीतिक दल अथवा विपक्ष के लिए स्थान नहीं था।
3. पार्टी का नियंत्रण — कम्युनिस्ट पार्टी का विभिन्न संस्थाओं पर गहरा अंकुश था।
4. सत्तावादी स्वरूप — समय के साथ यह व्यवस्था अधिक सत्तावादी होती गई।
5. लोकतांत्रिक स्वतंत्रता का अभाव — लोकतंत्र तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सीमित थी।

प्रश्न 2. सोवियत अर्थव्यवस्था की विकसित स्थिति के चार पक्ष बताइए।

उत्तर —

1. विकसित अर्थव्यवस्था — अमरीका को छोड़कर सोवियत अर्थव्यवस्था शेष विश्व की तुलना में अधिक विकसित थी।
2. उन्नत संचार प्रणाली — सोवियत संघ की संचार व्यवस्था अत्यंत विकसित थी।
3. विशाल ऊर्जा-संसाधन — उसके पास खनिज-तेल, लोहा, इस्पात तथा मशीनरी के विशाल संसाधन थे।
4. विकसित उपभोक्ता उद्योग — वहाँ पिन से लेकर कार तक विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन होता था।



15

प्रश्न 3. सोवियत संघ के अन्य गणराज्यों में असंतोष क्यों बढ़ा?

उत्तर —

1. **रूस का प्रभुत्व** — संघ के पंद्रह गणराज्यों में से एक होने के बावजूद रूस का लगभग हर मामले में प्रभुत्व था।
2. **उपेक्षा की भावना** — अन्य क्षेत्रों की जनता स्वयं को उपेक्षित और दमित महसूस करती थी।
3. **सांस्कृतिक इच्छाओं की अनदेखी** — जनता अपनी संस्कृति और अन्य मामलों की देखभाल स्वयं करना चाहती थी, लेकिन पार्टी ने इस इच्छा को पर्याप्त महत्त्व नहीं दिया।
4. **केंद्रीकृत नियंत्रण** — सत्ता और प्रशासन पर कम्युनिस्ट पार्टी का कठोर नियंत्रण बना रहा।

प्रश्न 4. गोर्बाचेव ने सोवियत संघ में सुधार क्यों शुरू किए?

उत्तर—

1. तकनीकी पिछड़ापन — पश्चिमी देशों में सूचना और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रांति हो रही थी।
2. पश्चिम की बराबरी — सोवियत संघ को पश्चिमी देशों के स्तर पर लाना आवश्यक हो गया था।
3. आर्थिक सुधार की आवश्यकता — सोवियत अर्थव्यवस्था कमजोर और गतिरुद्ध हो रही थी।
4. राजनीतिक सुधार — गोर्बाचेव सोवियत संघ को अधिक लोकतांत्रिक बनाना चाहते थे।
5. विदेशी संबंधों में सुधार — वे पश्चिमी देशों के साथ संबंध सामान्य बनाना चाहते थे।

प्रश्न 5. सोवियत संघ में सत्ता के विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया कैसे बढ़ी?

उत्तर —

1. 1991 का तख्तापलट — कम्युनिस्ट पार्टी के गरमपंथियों ने तख्तापलट का प्रयास किया।
2. येल्टसिन का विरोध — बोरिस येल्टसिन ने तख्तापलट का विरोध किया और प्रमुख नेता के रूप में उभरे।
3. रूसी गणराज्य का विरोध — रूसी गणराज्य ने केंद्रीकृत नियंत्रण स्वीकार करने से इंकार कर दिया।
4. सत्ता का स्थानांतरण — सत्ता धीरे-धीरे मास्को से गणराज्यों की ओर खिसकने लगी।
5. संप्रभुता की भावना — कई गणराज्य स्वयं को स्वतंत्र और संप्रभु राज्य मानने लगे।

प्रश्न 6. कम्प्युनिस्ट पार्टी के प्रति जनता का विश्वास क्यों घटा?

उत्तर —

1. जवाबदेही का अभाव — लंबे समय तक शासन करने के बाद पार्टी जनता के प्रति जवाबदेह नहीं रही।
2. भारी भ्रष्टाचार — प्रशासन में भ्रष्टाचार बढ़ गया।
3. सुधार की अक्षमता — व्यवस्था अपनी गलतियों को सुधारने में असमर्थ थी।
4. अत्यधिक केंद्रीकरण — विशाल देश की सत्ता अत्यधिक केंद्रीकृत थी।
5. विशेषाधिकार — पार्टी अधिकारियों को सामान्य नागरिकों की तुलना में अधिक विशेषाधिकार प्राप्त थे।

इन कारणों से जनता स्वयं को शासन से अलग महसूस करने लगी और सरकार का जनाधार खिसकता गया।

प्रश्न 7. गोर्बाचेव के सुधारों ने राजनीतिक संकट को कैसे बढ़ाया?

उत्तर —

1. व्यवस्था में ढील — सुधारों से राजनीतिक व्यवस्था पर नियंत्रण कम हुआ।
2. जन-अपेक्षाओं में वृद्धि — जनता की आकांक्षाओं और अपेक्षाओं में अचानक वृद्धि हुई।
3. जनमत का विभाजन — कुछ लोग तेज सुधार चाहते थे, जबकि दूसरे उन्हें बहुत तेज मानते थे।
4. गोर्बाचेव का समर्थन घटा — दोनों पक्षों की असंतुष्टि से उनका समर्थन कम होता गया।
5. राष्ट्रवादी भावनाओं का उभार — विभिन्न गणराज्यों में राष्ट्रीयता और संप्रभुता की माँग तेज हुई।

प्रश्न 8. शीतयुद्ध की समाप्ति के प्रमुख प्रभाव बताइए।

उत्तर —

1. विचारधारात्मक संघर्ष का अंत — समाजवाद और पूँजीवाद के बीच पुराना विवाद समाप्त हुआ।
2. सैन्य तनाव में कमी — दोनों गुटों की सेनाओं के बीच टकराव समाप्त हुआ।
3. हथियारों की होड़ समाप्त — तीव्र सैन्य और परमाणु हथियारों की प्रतिस्पर्धा का अंत हुआ।
4. सैन्य गुटबंदी कमजोर हुई — विश्व को सैन्य गुटों में बाँटने वाली परिस्थितियाँ बदलीं।
5. नई शांति की संभावना — विश्व में नई शांति की संभावना उत्पन्न हुई।

प्रश्न 9. सोवियत संघ के विघटन से विश्व के शक्ति-संबंधों में क्या बदलाव आया?

उत्तर —

1. शक्ति-संतुलन बदला — द्विध्रुवीय शक्ति-संबंध समाप्त हो गए।
2. अमरीका का प्रभुत्व — अमरीका विश्व की अकेली महाशक्ति बन गया।
3. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का प्रभुत्व — अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पूँजीवादी व्यवस्था प्रभावशाली हुई।
4. अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं का प्रभाव — विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाओं की भूमिका बढ़ी।
5. उदारवादी लोकतंत्र का प्रभाव — राजनीतिक जीवन में उदारवादी लोकतंत्र प्रभावशाली धारणा के रूप में उभरा।

प्रश्न 10. सोवियत संघ के विघटन के कोई दो परिणाम बताइए।

(RBSE-2022, RBSE-2025, RBSE-2026)

उत्तर —

- ✓ 1. शीतयुद्ध की समाप्ति — समाजवादी और पूँजीवादी गुटों के बीच विचारधारात्मक तथा सैन्य संघर्ष समाप्त हुआ।
- ✓ 2. अमरीका का एकमात्र महाशक्ति बनना — सोवियत संघ के पतन के बाद अमरीका विश्व की अकेली महाशक्ति बन गया।

प्रश्न 11. 'शॉक थेरेपी' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(RBSE-2022)

उत्तर —

1. **संक्रमण का मॉडल** — साम्यवादी व्यवस्था से लोकतांत्रिक-पूँजीवादी व्यवस्था में परिवर्तन के मॉडल को 'शॉक थेरेपी' कहा गया।
2. **मार्गदर्शन** — इसे विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा निर्देशित किया गया।
3. **निजी स्वामित्व** — राज्य की संपत्ति का निजीकरण और निजी स्वामित्व इसका प्रमुख आधार था।
4. **मुक्त व्यापार** — वित्तीय खुलापन, मुद्रा की परिवर्तनीयता तथा मुक्त व्यापार को महत्त्व दिया गया।
5. **पश्चिमी अर्थव्यवस्था से जुड़ाव** — पूर्व समाजवादी देशों को पश्चिमी अर्थतंत्र से जोड़ने का प्रयास किया गया।

* 100 marks P.T.O.

प्रश्न 12. 'इतिहास की सबसे बड़ी गराज-सेल' किसे और क्यों कहा गया?
(Model Paper-2026)

उत्तर —

रूस में राज्य-नियंत्रित औद्योगिक ढाँचे के बड़े पैमाने पर निजीकरण को 'इतिहास की सबसे बड़ी गराज-सेल' कहा गया।

1. लगभग 90 प्रतिशत उद्योगों को निजी हाथों या कंपनियों को बेच दिया गया।
2. महत्वपूर्ण उद्योगों की कीमत बहुत कम आँकी गई।
3. इन उद्योगों को औने-पौने दामों में बेच दिया गया।
4. इसी कारण इस महा-बिक्री को 'इतिहास की सबसे बड़ी गराज-सेल' कहा गया।

4

प्रश्न 13. भारत-सोवियत आर्थिक संबंधों की चार विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर —

1. **सार्वजनिक क्षेत्र को सहायता** — सोवियत संघ ने भारत की सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों को सहायता दी।
2. **इस्पात कारखानों में सहयोग** — भिलाई, बोकारो और विशाखापट्टनम के इस्पात संयंत्रों में आर्थिक एवं तकनीकी सहायता दी।
3. **मशीनरी उद्योग में सहयोग** — भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स जैसे संयंत्रों के विकास में सहायता दी।
4. **रुपये में व्यापार** — (विदेशी मुद्रा की कमी) के समय दोनों देशों ने रुपये को माध्यम बनाकर व्यापार किया।

USSR

प्रश्न 14. भारत-सोवियत संघ के मधुर संबंधों के दो उदाहरण दीजिए।
(RBSE-2025)

उत्तर — राजनीति तबेय

1. कश्मीर मुद्दे पर समर्थन — सोवियत संघ ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में कश्मीर के मामले पर भारत के पक्ष का समर्थन किया।
2. 1971 के युद्ध में सहायता — पाकिस्तान के साथ 1971 के युद्ध के कठिन समय में सोवियत संघ ने भारत की सहायता की।

प्रश्न 15. भारत और सोवियत संघ के सांस्कृतिक संबंध लिखिए।

(RBSE-2026)

उत्तर —

1. हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता — हिंदी फिल्में सोवियत संघ में अत्यंत लोकप्रिय थीं।
2. भारतीय संस्कृति का प्रभाव — भारतीय संस्कृति को वहाँ व्यापक लोकप्रियता मिली।
3. लेखकों की यात्राएँ — बड़ी संख्या में भारतीय लेखकों ने सोवियत संघ की यात्रा की।
4. कलाकारों का संपर्क — अनेक भारतीय कलाकार भी सोवियत संघ गए।



प्रश्न 1. 1970 के दशक के अंत तक सोवियत व्यवस्था के कमजोर पड़ने के कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर —

1970 के दशक के अंतिम वर्षों तक सोवियत व्यवस्था आर्थिक, तकनीकी और राजनीतिक समस्याओं के कारण कमजोर पड़ने लगी थी।

मुख्य बिंदु

1. हथियारों की होड़ का आर्थिक बोझ
अमरीका की बराबरी करने के लिए सोवियत संघ ने हथियारों की होड़ में भारी संसाधन खर्च किए।
2. प्रौद्योगिकी में पिछड़ापन
सोवियत संघ प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पश्चिमी देशों से पीछे रह गया।

3. बुनियादी ढाँचे की कमजोरी
परिवहन और ऊर्जा जैसे बुनियादी क्षेत्रों में पश्चिमी देशों की तुलना में पिछड़ापन बढ़ा।
4. जन-आकांक्षाओं की पूर्ति में असफलता
व्यवस्था नागरिकों की राजनीतिक और आर्थिक आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सकी।
5. अफ़गानिस्तान में हस्तक्षेप
1979 में अफ़गानिस्तान में हस्तक्षेप ने सोवियत व्यवस्था को और कमजोर किया।
6. उत्पादकता की कमी
लोगों का पारिश्रमिक बढ़ रहा था, लेकिन उत्पादकता और प्रौद्योगिकी में समान वृद्धि नहीं हुई।

7. उपभोक्ता वस्तुओं की कमी
दैनिक उपयोग की वस्तुओं की कमी बढ़ती गई।
8. खाद्यान्न आयात में वृद्धि
खाद्यान्न के लिए विदेशों पर निर्भरता लगातार बढ़ी।



प्रश्न 2. गोर्बाचेव के सुधारों और उनके प्रभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर —

मिखाइल गोर्बाचेव ने सोवियत व्यवस्था की आर्थिक, राजनीतिक और तकनीकी कमजोरियों को दूर करने के लिए सुधारों की नीति अपनाई।

प्रमुख सुधार

1. पश्चिम से संबंध सामान्य करना
गोर्बाचेव ने पश्चिमी देशों के साथ संबंधों को सामान्य बनाने का प्रयास किया।
2. लोकतंत्रीकरण
उन्होंने सोवियत संघ को अधिक लोकतांत्रिक रूप देने का निर्णय लिया।
3. आर्थिक-राजनीतिक सुधार
देश के भीतर आर्थिक और राजनीतिक सुधारों की प्रक्रिया शुरू की गई।

4. पेरेस्त्रोइका और ग्लासनोस्त
उन्होंने पेरेस्त्रोइका (पुनर्रचना) और ग्लासनोस्त (खुलापन) से जुड़े सुधार आरंभ किए।

सुधारों के प्रभाव

5. पूर्वी यूरोप में परिवर्तन
पूर्वी यूरोप के देशों की जनता ने अपनी सरकारों और सोवियत नियंत्रण का विरोध किया और अनेक साम्यवादी सरकारें गिर गईं।
6. पार्टियों के भीतर विरोध
कम्युनिस्ट पार्टियों के कई नेताओं ने इन सुधारों का विरोध किया।
7. जन-अपेक्षाओं का उभार
व्यवस्था में ढील से जनता की आकांक्षाएँ और अपेक्षाएँ तेजी से बढ़ीं।

8. राजनीतिक विभाजन

एक वर्ग सुधारों को धीमा मानता था, जबकि दूसरा वर्ग उन्हें बहुत तेज मानता था।

9. राष्ट्रवादी भावनाओं में वृद्धि

विभिन्न गणराज्यों में राष्ट्रीयता और संप्रभुता की माँग मजबूत हुई।



प्रश्न 3. 1991 में सोवियत संघ के विघटन की प्रक्रिया समझाइए।

उत्तर —

1991 में राजनीतिक संघर्ष, गणराज्यों की बढ़ती संप्रभुता तथा केंद्रीकृत सत्ता के कमजोर पड़ने से सोवियत संघ का विघटन हुआ।

मुख्य बिंदु

1. तख्तापलट का प्रयास

अगस्त 1991 में कम्युनिस्ट पार्टी के गरमपंथियों ने गोर्बाचेव के विरुद्ध तख्तापलट का प्रयास किया।

2. येल्तसिन का विरोध

बोरिस येल्तसिन ने इस तख्तापलट का जोरदार विरोध किया और प्रमुख नेता के रूप में उभरे।

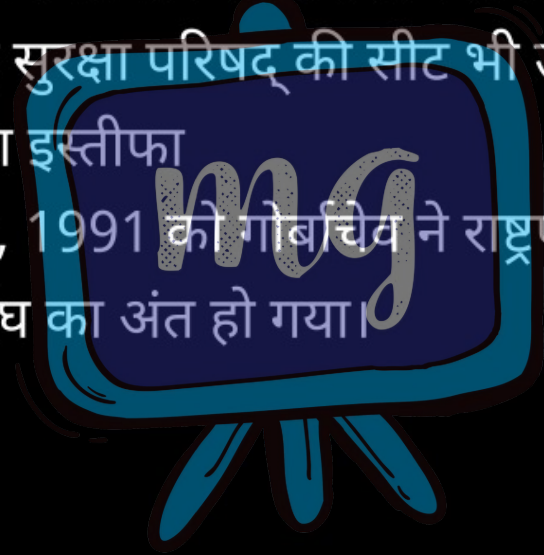
3. केंद्रीय नियंत्रण का विरोध
रूसी गणराज्य ने मास्को के केंद्रीकृत नियंत्रण को मानने से इंकार कर दिया।
4. सत्ता का गणराज्यों की ओर स्थानांतरण
सत्ता धीरे-धीरे मास्को से विभिन्न गणराज्यों की ओर खिसकने लगी।
5. रूस, यूक्रेन और बेलारूस का निर्णय
दिसंबर 1991 में इन तीन बड़े गणराज्यों ने सोवियत संघ की समाप्ति की घोषणा की।
6. स्वतंत्र राज्यों का राष्ट्रकुल
इसके बाद स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्रकुल का गठन हुआ तथा अन्य गणराज्य भी इसमें शामिल हुए।

7. रूस बना उत्तराधिकारी

रूस को सोवियत संघ का उत्तराधिकारी राज्य स्वीकार किया गया तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की सीट भी उसे मिली।

8. गोर्बाचेव का इस्तीफा

25 दिसंबर, 1991 को गोर्बाचेव ने राष्ट्रपति पद से इस्तीफा दिया और सोवियत संघ का अंत हो गया।



प्रश्न 4. सोवियत संघ के विघटन के तीन प्रमुख कारण बताइए।

(RBSE-2022)

उत्तर —

सोवियत संघ का विघटन उसकी राजनीतिक-आर्थिक कमजोरियों, प्रशासनिक गतिरोध और राष्ट्रवादी भावनाओं के उभार का परिणाम था।

1. राजनीतिक-आर्थिक संस्थाओं की कमजोरी

- सोवियत संस्थाएँ जनता की आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सकीं।
- अर्थव्यवस्था लंबे समय तक गतिरुद्ध रही।
- उपभोक्ता वस्तुओं की कमी बढ़ गई।
- जनता ने व्यवस्था पर सवाल उठाने शुरू कर दिए।

2. प्रशासनिक गतिरोध और कम्युनिस्ट पार्टी की कमजोरियाँ

- पार्टी जनता के प्रति जवाबदेह नहीं रही।
- प्रशासन में भ्रष्टाचार बढ़ गया।
- गलतियों को सुधारने की क्षमता कम थी।
- सत्ता अत्यधिक केंद्रीकृत थी।
- पार्टी अधिकारियों के विशेषाधिकारों से जनता असंतुष्ट हुई।

3. राष्ट्रवाद और संप्रभुता की भावना

- विभिन्न गणराज्यों में राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता की इच्छा बढ़ी।
- रूस, यूक्रेन, जार्जिया और बाल्टिक गणराज्यों में यह भावना विशेष रूप से मजबूत थी।
- यही सोवियत संघ के विघटन का अंतिम और सर्वाधिक तात्कालिक कारण सिद्ध हुआ।

प्रश्न 5. नए स्वतंत्र देशों के उदय के परिणाम स्पष्ट कीजिए।

उत्तर —

सोवियत खेमे के पतन के बाद अनेक नए स्वतंत्र देश अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में सामने आए।

मुख्य बिंदु

1. स्वतंत्र पहचान — नए देशों की अपनी अलग पहचान और राजनीतिक पसंद बनी।
2. बाल्टिक देशों की नई दिशा — बाल्टिक और पूर्वी यूरोपीय देशों ने यूरोपीय संघ तथा नाटो से जुड़ने की इच्छा व्यक्त की।
3. मध्य एशिया की नई भूमिका — मध्य एशियाई देशों ने अपनी विशेष भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाने का प्रयास किया।

4. रूस से संबंध — इन देशों ने रूस के साथ मजबूत संबंध बनाए रखे।
5. अन्य देशों से संबंध — साथ ही अमरीका, चीन और अन्य पश्चिमी देशों के साथ भी संबंध विकसित किए।
6. नए अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी — विश्व राजनीति में अनेक नए खिलाड़ी उभरे।
7. अलग-अलग हित और समस्याएँ — प्रत्येक देश के अपने हित, पहचान तथा आर्थिक-राजनीतिक समस्याएँ थीं।

प्रश्न 6. शॉक थेरेपी के कोई तीन परिणाम बताइए।

(RBSE-2023)

उत्तर —

1. औद्योगिक व्यवस्था का पतन

- रूस का राज्य-नियंत्रित औद्योगिक ढाँचा चरमरा गया।
- लगभग 90 प्रतिशत उद्योगों को निजी हाथों में बेच दिया गया।
- अनेक उद्योग अत्यंत कम कीमत पर बेचे गए।

2. मुद्रा और बचत का संकट

- रूसी मुद्रा रूबल के मूल्य में भारी गिरावट आई।
- मुद्रास्फीति बहुत बढ़ी।
- लोगों की जमापूँजी समाप्त होने लगी।

3. गरीबी और आर्थिक असमानता

- सरकारी रियायतें समाप्त होने से बड़ी संख्या में लोग गरीबी में चले गए।
- मध्य वर्ग हाशिए पर चला गया।
- निजीकरण से अमीर और गरीब के बीच गहरी आर्थिक विषमता उत्पन्न हुई।



प्रश्न 7. रूस से घनिष्ठ संबंधों से भारत को क्या लाभ हुए? (RBSE-2022)

उत्तर —

भारत और रूस के संबंध आपसी विश्वास और साझे हितों पर आधारित रहे हैं। इन संबंधों से भारत को अनेक क्षेत्रों में लाभ प्राप्त हुए।

मुख्य लाभ

1. कश्मीर मुद्दा — रूस के साथ संबंधों से भारत को कश्मीर से जुड़े मामलों में लाभ मिला।
2. ऊर्जा-आपूर्ति — रूस ने तेल संकट के समय भारत की सहायता की।
3. आतंकवाद संबंधी सूचनाएँ — अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद से संबंधित सूचनाओं के आदान-प्रदान में सहयोग मिला।

4. पश्चिम एशिया में पहुँच — भारत को पश्चिम एशिया में अपनी पहुँच बढ़ाने में सहायता मिली।
5. चीन के साथ संतुलन — चीन के साथ संबंधों में संतुलन बनाने में लाभ हुआ।
6. परमाणु कार्यक्रम — रूस भारत की परमाणविक योजना के लिए महत्वपूर्ण रहा।
7. अंतरिक्ष सहयोग — आवश्यकता के समय रूस ने भारत को क्रायोजेनिक रॉकेट उपलब्ध कराया।
8. वैज्ञानिक सहयोग — भारत और रूस अनेक वैज्ञानिक परियोजनाओं में साझेदार रहे हैं।



प्रश्न 1. सोवियत प्रणाली की शक्तियों तथा आंतरिक कमजोरियों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर —

1917 की समाजवादी क्रांति के बाद बनी सोवियत प्रणाली समाजवाद, समानता तथा राज्य-नियंत्रित अर्थव्यवस्था पर आधारित थी। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद सोवियत संघ एक महाशक्ति बनकर उभरा, लेकिन धीरे-धीरे उसकी आंतरिक कमजोरियाँ भी स्पष्ट होने लगीं।

1. सोवियत प्रणाली की शक्तियाँ

(क) विकसित अर्थव्यवस्था

- अमरीका को छोड़कर सोवियत अर्थव्यवस्था शेष विश्व की तुलना में अधिक विकसित थी।

- उसका घरेलू उपभोक्ता उद्योग भी विकसित था।

(ख) उन्नत संचार और परिवहन

- संचार प्रणाली अत्यंत उन्नत थी।
- विशाल और सुव्यवस्थित परिवहन प्रणाली ने दूर-दराज क्षेत्रों को जोड़ा।

(ग) विशाल प्राकृतिक संसाधन

- सोवियत संघ के पास खनिज-तेल, लोहा, इस्पात तथा मशीनरी के विशाल संसाधन थे।

(घ) न्यूनतम जीवन स्तर

- सरकार ने नागरिकों के लिए न्यूनतम जीवन स्तर सुनिश्चित किया।
- स्वास्थ्य, शिक्षा, बच्चों की देखभाल और लोक-कल्याण की सुविधाएँ रियायती दरों पर उपलब्ध थीं।

(ड) राज्य स्वामित्व

- भूमि और अन्य उत्पादक संपदाओं पर मुख्यतः राज्य का स्वामित्व तथा नियंत्रण था।

2. सोवियत प्रणाली की आंतरिक कमजोरियाँ

(क) नौकरशाही और सत्तावाद

- व्यवस्था पर नौकरशाही का शिकंजा बढ गया।
- राजनीतिक प्रणाली लगातार सत्तावादी होती गई।

(ख) लोकतंत्र का अभाव

- लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सीमित थी।
- अन्य राजनीतिक दलों और विपक्ष के लिए स्थान नहीं था।

(ग) कम्युनिस्ट पार्टी का अत्यधिक नियंत्रण

- पार्टी का सभी संस्थाओं पर गहरा नियंत्रण था।
- पार्टी जनता के प्रति जवाबदेह नहीं रही।

(घ) रूस का प्रभुत्व

- रूस का अन्य गणराज्यों पर प्रभाव अत्यधिक था।
- अन्य क्षेत्रों की जनता स्वयं को उपेक्षित और दमित महसूस करती थी।

(ङ) आर्थिक-तकनीकी पिछड़ापन

- हथियारों की होड़ ने भारी आर्थिक बोझ डाला।
- प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढाँचे में पश्चिम से पिछड़ापन बढ़ा।
- उपभोक्ता वस्तुओं की कमी तथा खाद्यान्न आयात में वृद्धि हुई।

(ग) कम्युनिस्ट पार्टी का अत्यधिक नियंत्रण

- पार्टी का सभी संस्थाओं पर गहरा नियंत्रण था।
- पार्टी जनता के प्रति जवाबदेह नहीं रही।

(घ) रूस का प्रभुत्व

- रूस का अन्य गणराज्यों पर प्रभाव अत्यधिक था।
- अन्य क्षेत्रों की जनता स्वयं को उपेक्षित और दमित महसूस करती थी।

(ङ) आर्थिक-तकनीकी पिछड़ापन

- हथियारों की होड़ ने भारी आर्थिक बोझ डाला।
- प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढाँचे में पश्चिम से पिछड़ापन बढ़ा।
- उपभोक्ता वस्तुओं की कमी तथा खाद्यान्न आयात में वृद्धि हुई।

प्रश्न 2. 'दूसरी दुनिया' के निर्माण में सोवियत संघ की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर —

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद सोवियत संघ के प्रभाव वाले पूर्वी यूरोप के देशों को समाजवादी खेमा अथवा 'दूसरी दुनिया' कहा गया।

1. पूर्वी यूरोप की मुक्ति
 - दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान सोवियत सेना ने पूर्वी यूरोप के देशों को फासीवादी शक्तियों के नियंत्रण से मुक्त कराया।
2. सोवियत प्रभाव की स्थापना
 - युद्ध के बाद पूर्वी यूरोप के अनेक देश सोवियत संघ के प्रभाव और नियंत्रण में आ गए।

3. समाजवादी व्यवस्था की स्थापना

- इन देशों की राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्थाओं को सोवियत संघ की समाजवादी प्रणाली के अनुरूप ढाला गया।

4. समाजवादी खेमे का निर्माण

- समान राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था वाले ये देश मिलकर समाजवादी खेमा बने।
- इन्हीं देशों को 'दूसरी दुनिया' कहा गया।

5. सोवियत संघ का नेतृत्व

- इस पूरे समाजवादी खेमे का नेतृत्व समाजवादी सोवियत गणराज्य ने किया।

प्रश्न 3. सोवियत संघ के विघटन में बोरिस येल्तसिन की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर —

बोरिस येल्तसिन सोवियत संघ के अंतिम वर्षों में एक महत्वपूर्ण राजनीतिक नेता के रूप में उभरे और उसके विघटन की प्रक्रिया में उनकी केंद्रीय भूमिका रही।

1. रूसी राजनीति में उदय
 - येल्तसिन ने रूस में आम चुनाव जीता और रूसी गणराज्य के प्रमुख नेता बने।
2. 1991 के तख्तापलट का विरोध
 - कम्युनिस्ट पार्टी के गरमपंथियों द्वारा किए गए तख्तापलट का येल्तसिन ने विरोध किया।
 - इस विरोध के कारण वे नायक की तरह उभरे।
3. केंद्रीकृत सत्ता का विरोध

- येल्तसिन के नेतृत्व वाले रूसी गणराज्य ने सोवियत संघ के केंद्रीकृत नियंत्रण को स्वीकार करने से इंकार कर दिया।
- 4. सत्ता का मास्को से बाहर जाना
 - इसके बाद सत्ता मास्को से विभिन्न गणराज्यों की ओर खिसकने लगी।
- 5. सोवियत संघ की समाप्ति की घोषणा
 - दिसंबर 1991 में येल्तसिन के नेतृत्व में रूस, यूक्रेन और बेलारूस ने सोवियत संघ की समाप्ति की घोषणा की।
- 6. स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्रकुल का गठन
 - इन गणराज्यों ने स्वतंत्र राज्यों का राष्ट्रकुल बनाने का निर्णय किया।
- 7. विघटन में केंद्रीय भूमिका
 - येल्तसिन को सोवियत संघ के विघटन में केंद्रीय भूमिका निभाने वाला नेता बताया गया है।

प्रश्न 4. सोवियत संघ के विघटन के बाद रूस की स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर —

भूमिका

सोवियत संघ के विघटन के बाद रूस पूर्व सोवियत व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण उत्तराधिकारी राज्य बनकर सामने आया।

1. उत्तराधिकारी राज्य

- रूस को आधिकारिक रूप से सोवियत संघ का उत्तराधिकारी राज्य स्वीकार किया गया।

2. सुरक्षा परिषद् में स्थान

- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में सोवियत संघ की सीट रूस को मिली।

3. अंतर्राष्ट्रीय दायित्व

- सोवियत संघ द्वारा किए गए अंतर्राष्ट्रीय करारों और संधियों को निभाने का दायित्व रूस ने स्वीकार किया।

4. परमाणु शक्ति

- पूर्ववर्ती सोवियत गणराज्यों में रूस एकमात्र परमाणु शक्ति संपन्न देश बना।

5. परमाणु निरस्त्रीकरण

- रूस ने अमरीका के साथ परमाणु निरस्त्रीकरण की दिशा में भी कदम उठाए।

6. पूँजीवाद की ओर संक्रमण

- रूस ने समाजवादी व्यवस्था से पूँजीवादी व्यवस्था की ओर संक्रमण के लिए शॉक थेरेपी अपनाई।
- इससे औद्योगिक ढाँचा कमजोर हुआ और बड़े पैमाने पर निजीकरण हुआ।

7. सामाजिक-आर्थिक कठिनाइयाँ

- रूबल का मूल्य गिरा और मुद्रास्फीति बढ़ी।
- गरीबी तथा आर्थिक असमानता में वृद्धि हुई।
- सामाजिक कल्याण की पुरानी व्यवस्था कमजोर हुई।

8. अर्थव्यवस्था का पुनर्जीवन

- सन् 2000 के आसपास रूस की अर्थव्यवस्था फिर खड़ी होने लगी।
- इसका प्रमुख कारण तेल, प्राकृतिक गैस और धातुओं जैसे प्राकृतिक संसाधनों का निर्यात था।

प्रश्न 5. सोवियत संघ के विघटन के प्रमुख कारणों का वर्णन कीजिए।

(Model Paper-2024)

उत्तर —

सोवियत संघ का विघटन किसी एक कारण से नहीं हुआ। इसके पीछे आर्थिक संकट, प्रशासनिक कमजोरियाँ, राजनीतिक असंतोष, सुधारों से उत्पन्न दबाव और राष्ट्रवादी भावनाएँ प्रमुख थीं।

1. राजनीतिक-आर्थिक संस्थाओं की कमजोरी
 - संस्थाएँ लोगों की बढ़ती आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सकीं।
 - इससे जनता का व्यवस्था पर विश्वास कम हुआ।

2. अर्थव्यवस्था का गतिरोध

- सोवियत अर्थव्यवस्था कई वर्षों तक गतिरुद्ध रही।
- उपभोक्ता वस्तुओं की भारी कमी हुई।
- खाद्यान्न आयात बढ़ता गया।

3. सैन्य व्यय का बोझ

- परमाणु हथियारों और सैन्य साजी-सामान पर बहुत अधिक संसाधन खर्च किए गए।
- पूर्वी यूरोप के सहयोगी देशों को सोवियत नियंत्रण में बनाए रखने पर भी धन खर्च हुआ।
- इससे आर्थिक दबाव बढ़ा।

4. पश्चिमी देशों से पिछड़ापन

- सोवियत नागरिकों को पश्चिमी देशों की प्रगति की जानकारी मिलने लगी।
- उन्हें अपनी व्यवस्था और पश्चिमी देशों के बीच बढ़ते अंतर का अनुभव हुआ।
- इससे राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक असंतोष बढ़ा।

5. प्रशासनिक और राजनीतिक गतिरोध

- प्रशासन में भ्रष्टाचार बढ़ा।
- व्यवस्था अपनी गलतियाँ सुधारने में असमर्थ थी।
- शासन में खुलापन लाने के प्रति अनिच्छा थी।
- सत्ता अत्यधिक केंद्रीकृत थी।

6. कम्युनिस्ट पार्टी की अलोकप्रियता
 - पार्टी जनता के प्रति जवाबदेह नहीं थी।
 - पार्टी अधिकारियों को विशेषाधिकार प्राप्त थे।
 - जनता शासन से अलग होती गई।
7. गोर्बाचेव के सुधारों से बड़ी अपेक्षाएँ
 - सुधारों ने जनता की आकांक्षाएँ तेजी से बढ़ाई।
 - कुछ लोग सुधारों को धीमा और दूसरे उन्हें बहुत तेज मानते थे।
 - इससे जनमत विभाजित हुआ और गोर्बाचेव का समर्थन कम हुआ।

8. राष्ट्रवाद और संप्रभुता की माँग

- रूस, यूक्रेन, जार्जिया और बाल्टिक गणराज्यों में राष्ट्रवादी भावनाएँ मजबूत हुईं।
- राष्ट्रीयता और संप्रभुता की इच्छा सोवियत संघ के विघटन का अंतिम और सर्वाधिक तात्कालिक कारण बनी।



प्रश्न 6. सोवियत प्रणाली तथा उसके विघटन के परिणामों की विवेचना कीजिए। (RBSE-2024)

उत्तर —

1917 की समाजवादी क्रांति के बाद स्थापित सोवियत प्रणाली समाजवाद, राज्य-नियंत्रित अर्थव्यवस्था तथा कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व पर आधारित थी। 1991 में इसके विघटन ने विश्व राजनीति में दूरगामी परिवर्तन उत्पन्न किए।

1. सोवियत प्रणाली

(क) समाजवादी आधार

- सोवियत प्रणाली समाजवाद और समतामूलक समाज की अवधारणा पर आधारित थी।

(ख) कम्युनिस्ट पार्टी की प्रधानता

- कम्युनिस्ट पार्टी राजनीतिक व्यवस्था की धुरी थी।
- किसी अन्य दल या विपक्ष के लिए स्थान नहीं था।

(ग) योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था

- अर्थव्यवस्था योजनाबद्ध और राज्य के नियंत्रण में थी।
- भूमि और उत्पादक संपदाओं पर राज्य का स्वामित्व था।

(घ) सामाजिक कल्याण

- स्वास्थ्य, शिक्षा, बच्चों की देखभाल और अन्य लोक-कल्याण सेवाएँ रियायती दरों पर उपलब्ध थीं।

(ड) आंतरिक कमजोरियाँ

- नौकरशाही और सत्तावाद बढ़ता गया।
- लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सीमित थी।
- रूस का अन्य गणराज्यों पर प्रभुत्व था।

2. सोवियत संघ के विघटन के परिणाम

(क) शीतयुद्ध का अंत

- समाजवाद और पूँजीवाद के बीच विचारधारात्मक संघर्ष समाप्त हुआ।
- हथियारों की होड़ में कमी आई।
- नई शांति की संभावना बनी।

(ख) विश्व शक्ति-संबंधों में बदलाव

- अमरीका विश्व की अकेली महाशक्ति बन गया।
- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावशाली हुई।

(ग) अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका

- विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाओं का प्रभाव बढ़ा।
- उदारवादी लोकतंत्र प्रभावशाली राजनीतिक धारणा बनकर उभरा।

(घ) नए देशों का उदय

- सोवियत संघ के विघटन से अनेक स्वतंत्र देश अस्तित्व में आए।
- इन देशों की अपनी पहचान, हित और आर्थिक-राजनीतिक समस्याएँ थीं।
- अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में अनेक नए खिलाड़ी सामने आए।

प्रश्न 7. शॉक थेरेपी क्या थी? इसके परिणाम बताइए। (RBSE-2024)

उत्तर —

सोवियत संघ के विघटन के बाद पूर्व साम्यवादी देशों को समाजवादी व्यवस्था से पूँजीवादी व्यवस्था में बदलने के लिए जिस विशेष आर्थिक मॉडल को अपनाया गया, उसे 'शॉक थेरेपी' कहा गया।

1. शॉक थेरेपी का अर्थ एवं स्वरूप

(क) पूँजीवादी व्यवस्था की ओर संक्रमण

- प्रत्येक देश को पूरी तरह पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ना था।

(ख) निजी स्वामित्व

- निजी स्वामित्व को सबसे प्रभावी माना गया।
- राज्य की संपत्ति का निजीकरण किया गया।

(ग) कृषि का निजीकरण

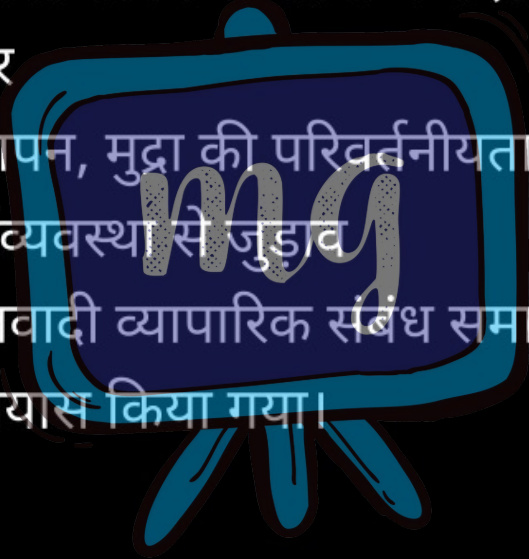
- सामूहिक फार्मों को निजी फार्मों में बदला गया।

(घ) मुक्त व्यापार

- वित्तीय खुलापन, मुद्रा की परिवर्तनीयता और मुक्त व्यापार को अपनाया गया।

(ङ) पश्चिमी अर्थव्यवस्था से जुड़ाव

- पुराने समाजवादी व्यापारिक संबंध समाप्त कर इन देशों को पश्चिमी अर्थतंत्र से जोड़ने का प्रयास किया गया।



2. शॉक थेरेपी के परिणाम

(क) औद्योगिक ढाँचे का पतन

- रूस का राज्य-नियंत्रित औद्योगिक ढाँचा चरमरा गया।
- लगभग 90 प्रतिशत उद्योगों का निजीकरण हुआ।
- महत्वपूर्ण उद्योग औने-पौने दामों में बेचे गए।

(ख) मुद्रा संकट

- रूबल के मूल्य में भारी गिरावट आई।
- मुद्रास्फीति बढ़ी और लोगों की बचत नष्ट हुई।

(ग) खाद्य सुरक्षा का संकट

- सामूहिक खेती की प्रणाली समाप्त हुई।
- रूस को खाद्यान्न आयात करना पड़ा।

(घ) गरीबी और असमानता

- सरकारी रियायतें समाप्त होने से लोग गरीबी में चले गए।
- मध्य वर्ग हाशिए पर चला गया।
- अमीर और गरीब के बीच गहरी आर्थिक असमानता पैदा हुई।

(ङ) माफिया वर्ग का उदय

- कई देशों में एक 'माफिया वर्ग' उभरा जिसने आर्थिक गतिविधियों पर नियंत्रण स्थापित किया।

(च) लोकतांत्रिक संस्थाओं की कमजोरी

- आर्थिक बदलाव को प्राथमिकता मिली, लेकिन लोकतांत्रिक संस्थाओं का निर्माण समान गति से नहीं हुआ।
- अनेक देशों में राष्ट्रपति अत्यधिक शक्तिशाली और संसद कमजोर रही।

प्रश्न 8. पूर्व सोवियत क्षेत्र में संघर्ष और तनाव की स्थिति का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर —

सोवियत संघ के विघटन के बाद उसके अनेक पूर्व गणराज्य राजनीतिक अस्थिरता, गृहयुद्ध, अलगाववादी आंदोलनों, सांप्रदायिक संघर्षों तथा बाहरी शक्तियों के हस्तक्षेप से प्रभावित हुए।

1. रूस में अलगाववादी संघर्ष

- रूस के चेचन्या और दागिस्तान में हिंसक अलगाववादी आंदोलन चले।
- चेचन विद्रोहियों से निपटने के दौरान सैन्य बमबारी हुई।
- इससे मानवाधिकारों का व्यापक उल्लंघन हुआ, लेकिन स्वतंत्रता की माँग समाप्त नहीं हुई।

2. ताजिकिस्तान में गृहयुद्ध
 - ताजिकिस्तान लगभग दस वर्षों तक, अर्थात् 2001 तक, गृहयुद्ध की चपेट में रहा।
3. सांप्रदायिक और क्षेत्रीय संघर्ष
 - पूरे मध्य एशियाई क्षेत्र में अनेक सांप्रदायिक संघर्ष हुए।
 - अज़रबैजान के नगरनों कराबाख क्षेत्र के कुछ स्थानीय अर्मेनियाई अलग होकर अर्मेनिया से मिलना चाहते थे।
4. जार्जिया में संघर्ष
 - जार्जिया के दो प्रांत स्वतंत्रता की माँग को लेकर गृहयुद्ध में शामिल थे।

5. शासन-विरोधी आंदोलन

- यूक्रेन, किर्गिज़िस्तान तथा जार्जिया में तत्कालीन शासन को हटाने के लिए आंदोलन हुए।

6. नदी-जल विवाद

- अनेक देशों और प्रांतों के बीच नदी-जल को लेकर विवाद हुए।
- इन संघर्षों के कारण अस्थिरता बढ़ी और सामान्य नागरिकों का जीवन कठिन हुआ।

7. प्राकृतिक संसाधनों के कारण बाहरी प्रतिस्पर्धा

- मध्य एशिया में पेट्रोलियम संसाधनों का विशाल भंडार था।
- इससे आर्थिक लाभ हुआ, लेकिन बाहरी शक्तियों तथा तेल कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा भी बढ़ी।

अमरीका

- 11 सितंबर 2001 के बाद अमरीका ने इस क्षेत्र में सैनिक ठिकाने प्राप्त करने का प्रयास किया।
- अफ़गानिस्तान और इराक युद्ध के दौरान यहाँ से विमानों के संचालन की अनुमति ली।

रूस

- रूस इन राज्यों को अपना निकटवर्ती 'विदेश' मानता था और उन्हें अपने प्रभाव में रखना चाहता था।

चीन

- खनिज-तेल संसाधनों के कारण चीन के हित भी इस क्षेत्र से जुड़े।
- चीनियों ने सीमावर्ती क्षेत्रों में व्यापार शुरू किया।

8. पूर्वी यूरोप और युगोस्लाविया

- चेकोस्लोवाकिया शांतिपूर्ण तरीके से दो भागों—चेक और स्लोवाकिया—में विभाजित हुआ।
- इसके विपरीत युगोस्लाविया में गंभीर संघर्ष हुआ।
- बोस्निया-हर्ज़ेगोविना, स्लोवेनिया और क्रोएशिया ने स्वतंत्रता घोषित की।
- नाटो ने हस्तक्षेप किया।
- युगोस्लाविया पर बमबारी हुई और जातीय संघर्ष ने गृहयुद्ध का रूप लिया।

प्रश्न 9. शीतयुद्ध के समय भारत और सोवियत संघ के संबंधों का वर्णन कीजिए।

(Model Paper-2025)

उत्तर —

शीतयुद्ध के दौरान भारत और सोवियत संघ के संबंध अत्यंत गहरे और बहुआयामी थे। दोनों देशों के बीच आर्थिक, राजनीतिक, सैन्य और सांस्कृतिक क्षेत्रों में व्यापक सहयोग था।

1. आर्थिक संबंध

- सोवियत संघ ने भारत की सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों को ऐसे समय में सहायता दी जब अन्य स्रोतों से सहायता प्राप्त करना कठिन था।
- भिलाई, बोकारो और विशाखापट्टनम के इस्पात कारखानों को आर्थिक तथा तकनीकी सहायता दी।

- भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स जैसे मशीनरी संयंत्रों में सहयोग दिया।
 - विदेशी मुद्रा की कमी के समय दोनों देशों ने रुपये के माध्यम से व्यापार किया।
2. राजनीतिक संबंध
- सोवियत संघ ने कश्मीर के मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारत के दृष्टिकोण का समर्थन किया।
 - 1971 में पाकिस्तान के साथ युद्ध के कठिन समय में भारत की सहायता की।
 - भारत ने भी सोवियत विदेश नीति का अप्रत्यक्ष किंतु महत्वपूर्ण समर्थन किया।
3. सैन्य संबंध
- सोवियत संघ ने भारत को उस समय सैन्य साजो-सामान दिया जब अन्य देश अपनी सैन्य तकनीक भारत को देने के लिए तैयार नहीं थे।

- दोनों देशों के बीच ऐसे समझौते हुए जिनके माध्यम से भारत संयुक्त रूप से सैन्य उपकरण तैयार कर सका।
- 4. सांस्कृतिक संबंध
 - हिंदी फिल्मों और भारतीय संस्कृति सोवियत संघ में लोकप्रिय थीं।
 - बड़ी संख्या में भारतीय लेखक और कलाकारों ने सोवियत संघ की यात्राएँ कीं।

